www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राणवान प्रशिक्षण हेतु शान्तिकुञ्ज आएँ

शान्ति कुञ्ज
हरिद्वार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI MAHENDRA SHARMA
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राणवान प्रशिक्षण हेतु शान्ति-कुञ्ज आयें

उच्चस्तरीय प्रशिक्षण हर जगह नहीं हो सकते। उसके लिए उपयुक्त साधन, वातावरण एवं प्रशिक्षकों का स्तर भी ऊँचा होना चाहिए। सेना के उच्च अफसर प्रशिक्षित कहाँ किये जायें, इसके लिए ऐसा स्थान तलाश करना पडता है, जहाँ से गोपनीय राजनीति के रहस्य फूट कर अनुपयुक्त लोगों तक न पहुँचें। सैनिकों के स्वास्थ्य से लेकर मनोभूमि बनाने की उपयुक्त स्थिति वहाँ है या नहीं ? चूँकि प्रसंग देश की सुरक्षा से जुड़ा होने के कारण अत्यधिक महत्त्व का है। उसके लिए तीक्ष्ण बुद्धि वाले अनुभवी, बहुज्ञ और व्युत्पन्नमति वाले अध्यापक भी चाहिए, जो बहुत कठिनाई से थोड़ी ही मात्रा में मिल सकते हैं।

ऊँची क्वालिटी के पौधे जिन नर्सरियों में तैयार किये जाते हैं, वहाँ की भूमि में पाये जाने वाले रसायनों की विशेष रूप से देखभाल की जाती है। इसी प्रकार घटिया पौधे लगाने वाले मालियों की अपेक्षा इन विशिष्ट नर्सरियों को विकसित करने के लिए विशेषज्ञों का पता लगाना और उन्हें महँगे वेतन पर भी किसी प्रकार सहमत करने और नियुक्त करने की आवश्यकता पड़ती है।

वेधशालाएँ हर जगह नहीं बन सकतीं। जहाँ ग्रह-उपग्रहों की कक्षाएँ सीधे कोण बनाती हैं, वहाँ उनके लिए स्थान का चयन होता है। प्राचीन काल का कोणार्क इसी स्तर का होने के कारण वहाँ सूर्य मंदिर बना था। उज्जयिनी की वेधशाला भी स्थान विशेष की महत्ता के कारण बनी थी। मिस्र के पिरामिड भी निर्माण की दृष्टि से अत्यंत असुविधाजनक होते हुए भी इसी कारण एक विशेष स्थान पर बनाये गये थे। आधुनिक खगोलवेत्ताओं ने भी वेध-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शालाएँ जहाँ भी बनाई हैं, वहाँ अनेक तथ्यों और विशेषताओं की उपस्थिति का ध्यान रखा है। भले ही वहाँ का आवागमन कितना ही कष्टसाध्य क्यों न हो ?

उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव जहाँ भी अवस्थित हैं, वहाँ से समस्त भूमण्डल असाधारण रूप से प्रभावित होता है। भूमध्य रेखा, कर्क रेखा, मकर रेखा आदि के अक्षांश अपने-अपने समीपवर्ती क्षेत्रों में वातावरण को असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं।

सौर मण्डल की, ग्रह-उपग्रहों की पृथ्वी के जिस क्षेत्र पर जिस स्तर की किरणें पहुँचती हैं, वहाँ के लोगों के रंग, कद, स्वभाव, आकार-प्रकार भी उसी स्तर के बनते हैं। मोटे तौर पर समझा यह जाता है कि वंश परम्परा के अनुरूप जीन्स संरचना इसका प्रमुख कारण है, पर वस्तुतः "जीन्स" अन्तरिक्षीय अभिवर्षण की सूक्ष्मता के अनुरूप ही अपना ढाँचा खड़ा करते हैं।

प्राचीन काल में महामानव ढालने वाले विशेषज्ञों ने भी अपने क्रिया-कलाप सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए उपयुक्त स्थानों का चयन किया था, भले ही वे आवागमन अथवा अन्य कठिनाइयों से घिरे हुए ही क्यों न रहे हों ? राम-लक्ष्मण को शिक्षा के लिए अन्य स्थान भी सुविधाजनक हो सकते थे; पर दशरथ की असहमति होते हुए भी वशिष्ठ के दबाव से उन्हें विश्वामित्र के आश्रम में ही भेजा गया ? भले ही उसकी तुलना में अन्य स्थान अधिक सुविधा-सम्पन्न ही क्यों न रहे हों ? कृष्ण की शिक्षा उज्जैन में संदीपनी आश्रम में ही बहुत कुछ सोच-समझकर की गयी। भले ही मथुरा के समीपवर्ती स्थानों में ही अधिक सुविधा-सम्पन्न स्थान क्यों न रहे हों। कण्व आश्रम में चक्रवर्ती भरत का शिक्षण संयोगवश ही नहीं, किन्हीं विशिष्ट कारणों पर अवलम्बित था। लव-कुश के शिक्षण हेतु अन्य स्थान अधिक सुविधा-सम्पन्न ढूँढ़े जा सकते थे, पर बाल्मीकि आश्रम अभीष्ट प्रयोजनों के लिए हर कसौटी पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खरा समझा गया था। बुद्धकाल में तक्षशिला एवं नालन्दा विश्व-विद्यालयों में दूर देशों से छात्र वहाँ की विशेषताओं के कारण ही पहुँचते थे। इसमें छात्रों की अपनी प्रयत्नशीलता तो कारण रही ही होगी, पर इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि उन स्थानों, शिक्षण केन्द्रों एवं अध्यापकों का भी उन सफल छात्रों पर अतिरिक्त अनुदान बरसा होगा।

प्राचीन काल में ऋषिकल्प अध्यात्म विज्ञानी अपने आत्म-शक्ति का प्रयोग और प्रयोगशालाओं के लिए स्थानों के चयन को प्राथमिकता देते थे। मात्र सुविधा के सहारे कहीं भी पसर नहीं जाते थे। हिमालय की ऊबड़-खाबड़ जमीन और शीत की अधिकता आदि अनेकों असुविधाओं के रहते हुए भी उन स्थानों का चयन अति गंभीरता के साथ, स्थान की सूक्ष्म विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए ही किया गया था। महाभारत के लिए कुरुक्षेत्र की भूमि का, बहुत बातों को ध्यान में रखते हुए चयन किया गया था।

मैसूर का चन्दन, अरब के खजूर, नागपुर के सन्तरे, लखनऊ के आम, भुसावल के केले, बलसाड़ के चीकू अपनी-अपनी विशेषताएँ लिए हुए हैं। यों पौधे लगाने और सींचने आदि के कार्य अन्यत्र भी उसी प्रकार होते हैं; पर स्थान की विशेषता अपना अतिरिक्त परिचय वहाँ के उत्पादनों में गहराई तक घुस कर देती है। तदनुरूप स्वाद तथा गुण-आकार आदि को भी प्रभावित करती है।

प्राचीन काल में हर दृष्टि से विशिष्ट गरिमा से भरे-पूरे क्षेत्रों में ही तीर्थ-स्थानों की स्थापना होती थी। वहाँ की प्रेरणा अनायास ही आगन्तुकों में अतिरिक्त शक्ति-संचार कर देती थी। उन्हीं स्थानों में गुरुकुल, आश्रम, आरण्यक एवं तपोवन स्थापित किये जाते थे। आज के समय में तो कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि सर्वत्र विकृतियों का प्रवेश और अवांछनीयताओं का अतिशय बाहुल्य हो जाने से तीर्थ भी वह प्रयोजन पूरा नहीं करते। अब तो वे पर्यटन-केन्द्र मात्र बन कर रह गये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि बन रही है। इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण होने ही जारहा है । इसके लिए कोई ऐसा ऊर्जा-स्रोत चाहिए, जहाँ से युगान्तरीय चेतना का आलोक उद्भूत हो और समस्त विश्व को अनुप्राणित करे। मत्स्यावतार की तरह इस छोटे से कमण्डलु में पैदा होकर भी, विश्व-वसुधा को उस प्रभाव से अनुप्राणित करे जो इस संधि-काल में अनिवार्य रूप से आवश्यक है। यह महाक्रान्ति की वेला है। पिछले दिनों छिट-पुट प्रयोजनों और क्षेत्रीय समस्याओं में हेर-फेर करने के लिऐ सीमित स्तर की क्रान्तियाँ होती रही हैं, पर इस बार तो भौतिक क्षेत्र की ही नहीं, आध्यात्मिक स्तर की समस्याओं को प्रभावित करने वाली समस्याओं से भी जूझना है और उनके द्वारा अपनायी गयी उलटी रीति-नीति को उलट कर सीधा किया जाना है। इसके लिए धरती पर ही एक ऐसा केन्द्र अभीष्ट था, जहाँ से उदय होता दिनमान समूचे विश्व को अपनी आभा से अनुप्राणित करे।

स्थान "शान्ति कुञ्ज" के छोटे से कार्य-क्षेत्र के रूप में निर्धारित हुआ है। प्रत्यक्ष रूप से देखने पर यह गंगा की गोद-हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपोभूमि के रूप में देखा-जाना जा सकता है। पर इसके अतिरिक्त भी यहाँ बहुत कुछ है। जिस दैवी सत्ता ने महान परिवर्तन की रूपरेखा बनायी है, उसी ने इस भूमि का भी परिशोधन, निर्धारण और भूमि-पूजन किया है। अखण्डदीप, अखण्ड जप, नित्य नियमित रूप से नौ कुण्ड यज्ञ शाला में अग्निहोत्र की प्रक्रिया आरंभ करायी है। इतना ही नहीं एक प्रशिक्षण शैली का उपक्रम भी निर्धारित किया है। साथ ही बैटरी-चार्ज करने जैसी अतिरिक्त व्यवस्था भी बनायी है, जिसका विद्युत प्रवाह उन सभी को अनुप्राणित-उत्तेजित करता है, जो उसके साथ भावनापूर्वक उच्च उद्देश्यों को साथ लेकर आते और जो कुछ यहाँ विद्यमान है, उसके अवगाहन में लग जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शान्तिकुञ्ज में क्या पढ़ाया जाता है, इसके लिए पाठयक्रम उलटने-पुलटने की आवश्यकता नहीं है। एक ही बात देखी जानी चाहिए कि यहाँ का एक ही मन्तव्य है "प्रतिभा-परिष्कार"। यह किसी के हाथ लग सके, तो शरीर और बुद्धि तथा परिस्थितियों की दृष्टि से साधारण होते हुए भी व्यक्तित्व की दृष्टि से असाधारण बना जा सकता है। ऐसे कर्तृत्व प्रस्तुत हो सकते हैं, जैसा कि हनुमान, अंगद, नल-नील, जामवन्त जैसों ने, साधारण दीख पड़ने वालों ने कर दिखाये। उन्होंने न केवल अपने को उत्कृष्ट बनाया, वरन् अपने समय और वातावरण को भी परिष्कृत बनाने में वे समर्थ हो सके। तूफानी चक्रवात एवं प्रचण्ड धारा में दृष्टिगोचर होने वाली भँवरों के समतुल्य अपनी सत्ता व विशिष्टता का भी परिचय दे सके। समय की सबसे बड़ी आवश्यकता युग नेतृत्व की है। इसके साथ स्थानीय, क्षेत्रीय, वैयक्तिक, सामूहिक, राजनैतिक, आर्थिक, बौद्धिक, चारित्रिक एवं सृजन-संभावनाओं का सही रूप में समाधान कर सकने की क्षमता भी जुड़ती है। संक्षिप्त में शान्तिकुञ्ज का प्रशिक्षण, शक्ति-अनुदान एवं वह साहस-कौशल उभारता है, जो बीज रूप में हर किसी के भीतर विद्यमान है।

शान्तिकुञ्ज की ५ या ९ दिवसीय सत्र-साधना हर बीज को अंकुरित कर देने तक की सफलता उपलब्ध कराती है। यह प्रयत्न स्वयं का साहस और वातावरण जुटाने पर निर्भर है कि बीज में उगे हुए अंकुर किस गति से ऊँचे उठ सके और किस स्तर की द्रुतगामिता अपनाकर अपने को देव मानवों की, युग पुरुषों की पंक्ति में खड़े करने में सफल हो सके ?

मिशन की पत्रिकाओं के पाठक-परिजनों को प्रथम आह्वान में आमंत्रित किया गया है कि वे यथा-संभव जल्दी ही युग संधि की वेला में एक सत्र-प्रशिक्षण शान्तिकुञ्ज आकर सम्पन्न करलें; और बन पडे तो हर साल एक बार आकर अपनी बैटरी को नए सिरे से चार्ज करा लिया करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शान्तिकुञ्ज की भूमि एक प्रकार से अभिमंत्रित की गयी है। लक्ष्मण-रेखा भी इसी प्रकार अभिमंत्रित की गई थी, जिसकी मर्यादा में रहने पर सीता हर दृष्टि से सुरक्षित रहतीं। इसी प्रकार इस भूमि को लगभग वैसा बनाया गया है, जैसा कि माता के गर्भ में भ्रूण सुरक्षित रहता है। साधना एवं शिक्षण की अवधि में छात्रों को अधिकांश समय इसी परिधि में रहने का अनुबंध है। समुचित लाभ के लिए यह आवश्यक भी था। अनावश्यक लोगों को, अशिक्षितों, वयोवृद्धों, बीमारों, बच्चों को साथ लेकर चलने की मनाही इसीलिए की है कि सैर-सपाटे के उत्सुकों और अति गंभीर अध्यात्म-प्रसंगों पर दत्तचित्त होने वालों के बीच किसी प्रकार का तालमेल बन नहीं पाता; साथ ही आश्रम का अनुशासन भी भंग होता है।

जिस प्रकार इन दिनों पिता का नाम भी सरकारी कागजों में दर्ज किया जाता है, उसी प्रकार पुरातन काल में उस गुरुकुल का भी उल्लेख रहता था, जिससे ज्ञात होता था कि प्रशिक्षण का अविच्छिन्न अंग समझी जाने वाली महत्ता एवं गरिमा कहाँ से प्राप्त की? जिस प्रकार राजा की संतानें राजकुमार कही जातीं और अपेक्षाकृत ऊँचे स्तर पर सम्मानित होती थीं, उसी प्रकार अगले दिनों शान्तिकुञ्ज के प्रशिक्षण के साथ अपने को जुड़ा हुआ होने के रूप में अपना परिचय देने वाले भी निश्चित रूप से गौरवान्वित होंगे। वंश-गोत्र के रूप में पूर्वजों के साथ जुड़ी परम्पराओं का उल्लेख चिरकाल तक होता रहता है। गुरुकुल एवं वंशकुल का स्तर प्रायः एक ही प्रकार की शृंखला के साथ जुड़ता है। इस प्रकार न केवल सत्र-शृंखला में सम्मिलित होने वाले अपनी गौरव-गरिमा का अभिवर्धन करेंगे, वरन् अपनी भावी पीढ़ियों को भी उस श्रेय से अभिभूत करने का सुयोग-सौभाग्य प्रदान करेंगे। हनुमान के वंशज समझे जाने वाले बन्दरों की अभी भी मंगलवार के दिन अभ्यर्थना होती है। बगीचा लगाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाला स्वयं यशस्वी होता है; उसकी दूसरी-तीसरी पीढ़ियाँ भी लाभान्वित एवं यशस्वी होती हैं।

शान्ति-कुञ्ज का कोई प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अपने में कोई अतिरिक्त विशिष्टता उत्पन्न न करें, यह हो ही नहीं सकता। उस आधार पर कोई गौरव-गरिमा भरे काम करने में, जन-नेतृत्व में समर्थ होकर ही रहेगा। इस आधार पर उस यशस्वी-परम्परा की चर्चा भविष्य में भी होती है। अगले दिनों जब शान्तिकुञ्ज से संबंधित नवनिर्माण में योगदान करने वालों का इतिहास लिखा जायेगा, तो हो सकता है कि उस प्रकाशन में मात्र पहली पीढ़ी का ही नहीं, वरन् उन पद-चिह्नों पर चलने वाली दूसरी-तीसरी पीढ़ी भी अपने को गौरवान्वित अनुभव करे।

देवर्षि नारद कहीं कुछ समय ही ठहरते थे। संक्षेप में ही वार्तालाप करते थे। कभी-कभी तो उनका प्रयोग वैखरी वाणी की अपेक्षा मध्यमा, परा, पश्यन्ती वाणी में इस स्तर का होता था कि वह क्षण भर में अन्तराल की गहराई तक जा पहुँचता था और पाने वाले को असाधारण सौभाग्यशाली बना देता था। इतिहास साक्षी है कि नारद के सम्पर्क में आने वाले कितने सामान्य व्यक्ति असाधारण ऊँचाई तक पहुँचे। उसी प्रसंग को इन दिनों इस रूप में भी समझा जा सकता है कि शान्ति-कुञ्ज का सम्पर्क जुड़ने पर विद्युत-प्रवाह के साथ जुड़ जाने जैसा चमत्कार उत्पन्न होता है एवं व्यक्ति का कायाकल्प कर देता है।

मुद्रक:—युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org